ओ३म्



ब्रह्मचर्य के साधन

ब्रह्मचर्य के साधन

मेखला

[एकादश भाग]

ब्रह्मचारी के तीन धार्मिक चिह्न

ब्रह्मचारी तीन धार्मिक चिह्नों को धारण करता है।

(१) शिखा

जिसको चोटी भी कहते हैं। जब बालक एक वर्ष का वा तीन वर्ष का हो जाता है उस समय उस का मुण्डन वा चूडाकर्म संस्कार होता है। इसमें बालक के सिर के सभी बाल वा केश कटवा दिये जाते हैं। केवल शिखा (चोटी) रक्खी जाती है। वैसे दूसरी बार बाल मुण्डवाते समय शिखा वा चोटी रखवाना अच्छा माना जाता है।

(२) सूत्र वा यज्ञोपवीत:—

विद्या का चिह्न है जिसे ब्रह्मचारी उपनयन संस्कार के समय धारण करता है। घर पर इसे माता पिता तथा गुरुकुल में आचार्य यज्ञोपवीत संस्कार कर सूत्र वा जनेऊ को धारण कराता है। वेद में आदेश भी है:-

आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भमन्तः।
तं रात्रिस्तिस्र उदरे बिभर्ति तं जातं द्रष्टुमभिसंयन्ति देवाः

अथर्व. ११।७।३।

आचार्य ब्रह्मचारी को यज्ञोपवीत (जनेऊ) धारण कराके अपने पास लाता है अर्थात् यहां तक निकट लाता है उसे अपने गर्भ में धारण कर लेता है, उसका माता के समान धारण-पोषण करता है। आचार्य की छत्र-छाया में रहकर उसका विद्या का द्वितीय जन्म होता है, जिससे वह द्विज कहलाता है। जब तक उसका तीनों प्रकार का अर्थात् आध्यात्मिक आधिभौतिक और आधिदैविक

Aditya Shukla

नहीं कर देता तब तक अपनी देख रेख में रखता है।
...र्य के गर्भ की तीन रात्रियां हैं। प्रकृति जीवात्मा और
...ना सम्बन्धी अज्ञान की ही तीन अन्धकारमय रात्रियां हैं,
...दूर करके आचार्य ब्रह्मचारी को दर्शनीय विद्वान् बना देता है
...ब्रह्मचारी का सब देव विद्वान् लोग आदर सम्मान करते हैं
...ब्रह्मचारी का ब्रह्मसूत्र=यज्ञोपवीत धारण करना, आचार्य के
...आना (उपनयन धारण करना) सार्थक हो जाता है। वह
...तेजस्वी ब्रह्मचारी विद्वान् होकर चतुर्थ प्रकाशमय अवस्था
...देवों के ऊंचे स्थान को प्राप्त करता है। जनेऊ धारण करने
...समय ५ वर्ष की आयु से लेकर १२ वर्ष की आयु तक माना है।
...ब्रह्मचारी का द्वितिय धार्मिक चिह्न यज्ञोपवीत जनेऊ वा उपनयन
...जाता है। इसे विद्या पढ़ने में समर्थ सभी बालक-बालिकायें
...ण करते हैं।

...खला:—

ब्रह्मचारी का तृतीय चिह्न मेखला है जिसे तगड़ी वा तागड़ी
कहते हैं। इसे धारण करने का समय भी सामान्यावस्था में ५
...से लेकर १२ वर्ष की आयु तक ही है। वेदारम्भ संस्कार के
...य ही विद्वान् आचार्य ब्रह्मचारी को मेखला धारण कराता है।
...कल घरों में मातायें ही बालकों के मेखला, तगड़ी बांध देती हैं।
...ले कन्यायें भी मेखला तथा जनेऊ धारण करती थीं। आजकल
...ल लड़के ही मेखला तगड़ी पहनते हैं। कन्यायें तगड़ी नहीं
...नतीं। विवाह होने पर आभूषण के रूप में चांदी की तगड़ी
...खला) पहनती हैं। पुरानी मूर्तियों में देखने से तो यही प्रमाणित
...ता है कि स्त्री पुरुष दोनों ही मेखला धारण करते थे। देवसंज्ञक
...द्वान् ही ब्रह्मचारी को मेखला प्रदान करता है। वेद में मेखला सूक्त
...इस पर अच्छा प्रकाश डाला है। इस सूक्त में पांच मन्त्र आते
...। जिनकी व्याख्या नीचे की जाती है।

Aditya shukla

मेखला सूक्त

य इमां देवो मेखलामाबबन्ध यः सन्ननाह य उ नो
युयोज। यस्य देवस्य प्रशिषा चरामः स पारमिच्छात्
स उ नो विमुञ्चात् ॥ अथर्व ६।१३३।१॥

अर्थः- (यः देवः) जिस देवसंज्ञक विद्वान् आचार्य, गुरु ने (नः) हमारे (इमां) यह (मेखलां) मेखला तगड़ी (आबबन्ध) बांधी है। (यः सन्ननाह) जिसने सजाई है (उ) और (यः युयोज) जिसने संयुक्त की है (यस्य) जिस (देवस्य) विद्वान्, आचार्य के (प्रशिषा) उत्तम शासन से (चरामः) हम (ब्रह्मचारी) विचरते वा चलते हैं (सः) वह (नः) हमें (पारम्) पार (इच्छात्) लगावे (सः उ) वह ही कष्टों से, दुःखों से, सर्व प्रकार के बन्धनों से (विमुञ्चात्) मुक्त करे, छुड़वाये।

महर्षि दयानन्द इस युग में आप्त पुरुष हुए हैं। "आप्तोपदेशः शब्दः" (न्यायदर्शन १।१।७)। आप्त पुरुष का उपदेश वा कथन सत्य होता है अतः वह शब्द प्रमाण की कोटि में आजाता है इसीलिए वह सब को माननीय होता है। महर्षि देव दयानन्द सत्यार्थप्रकाश में लिखते हैं:—"विद्वांसो हि देवाः" (शतपथ-ब्राह्मण ३।७।३।१०) "जो विद्वान् हैं, उन्हीं को देव कहते हैं। जो सांगोपांग चार वेदों के जाननेवाले हैं उनका नाम ब्रह्मा और जो उनसे न्यून कहे हों, उनका नाम देव अर्थात् विद्वान् है।"

वेद में देव शब्द

महर्षि दयानन्द "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है" ऐसा मानते हैं और ब्रह्मा से लेकर जैमिनि पर्यन्त सभी ऋषि-महर्षि इसी सिद्धान्त को मानते आये हैं। मनु जी महाराज ने:—

"धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः"

धर्म का यथार्थ रूप जानने के लिये परम प्रमाण वेद को

Aditya Shukla

याना है। वेद में देव शब्द का बहुत ही प्रयोग हुआ है।

देव शब्द "दिवु" धातु से बना है, इसके ग्यारह अर्थ हैं। खेलना
जने की इच्छा, व्यवहार(आदान-प्रदान), प्रकाश, प्रशंसा, आनन्द,
कार, निद्रा, शोभा, गति (ज्ञान, गमन, प्राप्ति) आदि । देवों
देव सबसे बड़ा विद्वान् होने से परमात्मा को भी देव कहते हैं।

(१) यह संसार परमात्मा और विद्वान् दोनों का क्रीडा क्षेत्र है।
रमात्मा संसार का कर्त्ता-धर्त्ता और हर्त्ता है, वह सृष्टि की रचना
रता है, सब प्राणियों का पालन-पोषण करता है और सब जीवों
कर्मों का, यथायोग्य कर्मों का फल देकर सुखी वा दुःखी रखता
, यही प्रभु का खेल है। विद्वान् भी विद्या के द्वारा अपनी क्रीडा
रता है, अविद्या का नाश करके प्राणियों को अनेक प्रकार के
ख प्रदान करता है। देव कोटि का विद्वान् ईश्वर की आज्ञानुसार
लकर अपना खेल खेलता है। वह खूब आनन्द लेता है और अपनी
वद्या के द्वारा अन्य प्राणियों को सुख प्रदान करता है। मूर्ख अपनी
मूर्खता से ऐसे खेल खेलते हैं जो अनेक दुःख और बन्धन के कारण
होते हैं।

(२) विद्वान् अपने सब कार्यों में सफल होते हैं, विजय उनके
पैर चूमती है। मूर्खों की पग-पग हार होता है।

(३) देव व्यवहारकुशल होते हैं, मूर्ख इसके विपरीत व्यवहार
शून्य होते हैं।

(४) देव ज्ञानी तथा दूसरों को ज्ञान देने वाले होते हैं, ज्ञान
का प्रकाश ही तो उनको अनेक दिव्य गुणों से भर देता है, इसी
प्रकाश से वे संसार के पथप्रदर्शक वा गुरु बनते हैं।

(५) अनेक विद्यादि दिव्य गुणों के कारण उनकी स्तुति वा
प्रशंसा होती है, क्योंकि वे देव परोपकार में ही लगे रहते हैं।

(६) देवों के स्वप्न संसार को स्वर्ग बनाने के होते हैं। वे
शरीर और मस्तिष्क स्वस्थ रखने के लिये उचित मात्रा में निद्रा

का सेवन करते हैं ।

(७) परमात्मा की आज्ञानुसार आचरण करने से देव सदैव मुदित=प्रसन्नचित्त आनन्द में रहते हैं ।

(८) देवों में स्वात्माभिमान होता है, मिथ्या अभिमान अहंकार नहीं होता ।

(९) अपने दिव्य गुणों के कारण उनमें विशेष कान्ति=कमनीयता होती है । उनकी यह कान्ति वा तेज सब के आकर्षण का कारण बनता है ।

(१०) सब विद्याओं के द्वारा देव संज्ञक विद्वान् संसार में अविद्या का नाश करके विद्या का प्रकाश फैलाते हैं ।

(११) देव सदैव शुभ कर्मों के करने के लिये पुरुषार्थ करते हैं, जुटे रहते हैं, मूर्ख प्रमादी आलसी अथवा अधर्म पाप करने में अपने कर्त्तव्य की पूर्ति समझते हैं ।

(१२) देव अपने जीवन में पृथ्वी से लेकर परमात्मा पर्यन्त का ज्ञान करते तथा अन्यों को कराते हैं । वे स्वयं जीवनमुक्त होते हैं और अन्यों को भी जीवन के चरम लक्ष्य मोक्ष की ओर प्रवृत्त करते हैं । ये अर्थ विद्वान् और परमात्मा दोनों में घटते हैं इसलिये दोनों ही देव कहलाते हैं ।

वेद के व्याकरण निरुक्त में महर्षि यास्क ने निम्न प्रकार से देव शब्द के अर्थ किये हैं :—

देवो दानाद्वा दीपनाद्वा द्योतनाद्वा द्युस्थानो भवतीति वा ॥

अ. ७ पा. ४ ख. १५

दान देने से देव नाम होता है, जो अपने विद्यादि सभी पदार्थों को संसार के हितार्थ देता है, वह विद्वान् देव नाम से संसार में प्रसिद्ध होता है । दीपन विद्या का प्रकाश करने से, द्योतन सत्योपदेश देने से विद्वान् को देव कहते हैं । सब मूर्तिमान् द्रव्यों का प्रकाश करने से सूर्यादि लोकों को भी देव कहते हैं । माता, पिता,

Adityashukla

आचार्य और अतिथि, विद्वान् संन्यासी भी पालन, विद्या और सत्य उपदेश के करने से देव कहे जाते हैं। इन सब देवों का देव आदि गुरु ईश्वर भी अपने उपरोक्त गुणों के कारण सब से बड़ा देव महादेव कहलाता है।

देवों द्वारा मेखला बन्धन

इस मन्त्र में देव शब्द का प्रयोग विद्वान् आचार्य गुरु के लिये हुआ है वह ही अपने ब्रह्मचारियों के मेखला बांधता है। क्योंकि मेखला के समान पवित्र चिह्न के द्वारा व्रत में बांधने का अधिकार केवल वेद भगवान् ने देवसंज्ञक आचार्य को ही दिया है। क्योंकि :—

"सदा देवा अरेपसः"

देवसंज्ञक निष्काम ज्ञानी विद्वान् आचार्य सदा निर्दोष और निष्पाप होते हैं, क्योंकि वे पवित्र वेद के ज्ञान की गंगा वहा कर सारे संसार के पाप तथा दोषों को धो डालते हैं, सब को ज्ञानामृत पिलाकर निष्पाप करके इनका धारण पोषण करते हैं। ये देव स्वयं परिश्रमी होते हैं और

"न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवाः"

परिश्रम के बिना देव किसी के मित्र वा सखा नहीं बनते, वे पुरुषार्थियों के ही साथी होते हैं। क्योंकि देवों की मित्रता का लाभ परिश्रम से थके हुये मानवों को ही प्राप्त होता है। देवों का देव भगवान् भी :—

'इन्द्र इच्चरतः सखा"

पुरुषार्थी के ही सखा सहायक होते हैं और देव संज्ञक विद्वान् "प्रशिषं यस्य देवाः" परम देव भगवान् के प्रत्यक्ष सत्यस्वरूप शासन न्याय और उसकी एकमात्र आज्ञा को मानते हैं। इसलिये वे भी ईश्वर के समान पुरुषार्थी, विद्यार्थी से विशेष स्नेह करते हैं। इसीलिये नीतिकारों ने इस सत्य को इस प्रकार प्रकट किया है :-

शास्त्रों में मेखला

शास्त्रों में तो वर्ण भेद से मुञ्जादि की मेखला का वर्णन मिलता है। मनुस्मृति अ० २ में इस प्रकार लिखा है।—

मौञ्जी त्रिवृत्समा श्लक्ष्णा कार्या विप्रस्य मेखला।
क्षत्रियस्य तु मौर्वी ज्या वैश्यस्य शणतान्तवी ॥४२॥

ब्राह्मण को मूञ्ज की तीन लड़ की मेखला बनानी चाहिये। यह मेखला समान, चिकनी और सुखस्पर्श वाली हो। चुभने वाली न हो, देखने में सुन्दर हो, इसके गुण=लड़ें एक समान हों और चिकनी हों।

कुल्लूकभट्ट ने लिखा है:—

मुञ्जमयी त्रिगुणा समगुणत्रयनिर्मिता सुखस्पर्शा ब्राह्मणस्य मेखला कर्त्तव्या। क्षत्रियस्य मूर्वामयी ज्या धनुर्गुणरूपा मेखला।

क्षत्रिय को मूर्वा की दो लड़ की मेखला पहननी चाहिए। मूर्वा नाम की एक लता होती है जिससे धनुष की डोरी बनती है इसे चिनार या चुरनहार भी कहते हैं।

वैश्य को शण की तीन लड़ की मेखला धारण करनी चाहिए।

"वैश्यस्य शणसूत्रमयो" अर्थात्

शण की डोरी बनाकर उसे त्रिवृत तीन लड़ का (भाण) बट लेना चाहिए।

सामान्य रूप से "त्रिगुणा प्रदक्षिणा मेखला" मेखला तीन गुणवाली होती है इसीलिए इसका एक नाम "त्रिगुणा" भी है। आज तक रीति भी यही चली आरही है कि तीन लड़ों की मेखला बांधी जाती है।

Aditya Shukla

मेखला के निर्माण में विकल्प

मनुस्मृति में लिखा है:—

मुञ्जालाभे तु कर्त्तव्याः कुशाश्मन्तकबल्वजैः ।
त्रिवृता ग्रन्थिनैकेन त्रिभिः पञ्चभिरेव वा ॥४३॥

यदि उपर्युक्त मुञ्ज आदि न मिले तो मुञ्ज के अभाव में ब्राह्मण कुशा और क्षत्रिय को मुञ्ज के अभाव में अश्मन्तक और वैश्य शण के अभाव में बल्वज से मेखला बनानी चाहिए । मेखला वृता तीन लड़वाली होनी चाहिए। मेखला में एक तीन वा पांच न्थियां हो सकती हैं। कुछ का मत ऐसा है कि ब्राह्मण को एक त्रिय को तीन और वैश्य को पांच ग्रन्थियां लगानी चाहिएं।

जिन मूंजादि से मेखला बनती है उनके गुण निघण्टु में इस कार लिखे हैं:—

मूंज के गुण

भद्रमुञ्जः शरो बाणस्तेजनश्चक्षुवेष्टनः ।
मुञ्जो मुञ्जातको बाणः स्थूलदर्भः सुमेखलः ॥१५०॥
मुञ्जद्वयं तु मधुरं तुवरं शिशिरं तथा ।
दाहतृष्णाविसर्पास्त्रमूत्रकृच्छ्राक्षिरोगहृत् ॥१५१॥
दोषत्रयहरं वृष्यं मेखलासूपयुज्यते ।

भद्रामुञ्ज को रामशर भी कहते हैं इसके संस्कृत में भद्रमुञ्ज र बाण तेजन चक्षुवेष्टन आदि नाम है।

मूंज के नाम

मुञ्ज, मुञ्जातक, बाण, स्थूलदर्भ, सुमेखलादि संस्कृत के नाम है। दोनों प्रकार की मूञ्ज मधुर, कषैली, शीतल, वीर्यवर्धक और

दाह, तृषा, विसर्प, आम, मूत्रकृच्छ्र, नेत्ररोग तथा तीनों दोषों को नष्ट करती है। मूञ्ज को रस्सी से मेखला बनती है इसलिए इसे सुमेखल भी कहते हैं। यह स्तम्भक वीर्य को धारण करनेवाली वीर्य-वर्धक वीर्यरक्षा में सहायक और पुष्टिकारक होती है। जिस भूमि में यह लग जाती है, किसान उसे खेती के योग्य समझते हैं।

मूञ्ज के अभाव में ब्राह्मण को कुशा वा दर्भ को मेखला धारण करनी लिखी है।

दर्भद्वयं त्रिदोषघ्नं मधुरं तुवरं हिमम्।
मूत्रकृच्छ्राश्मरीतृष्णाबस्तिरुक्प्रदरास्रजित्॥

दर्भ कुशा दो प्रकार की होती है जिसके लम्बे पत्ते होते हैं वह डाभ कहाती है इसको क्षुरपत्र कहते हैं। इसके गुण ये हैं:—कुश और डाभ त्रिदोष नाशक, मधुर कषैले, शीतल और मूत्रकृच्छ्, पत्थरी, तृषा, वस्तिरोग, प्रदर (स्त्री का धातु रोग) तथा रुधिर विकार नाशक हैं। उपर्युक्त गुणों के अनुसार अनेक रोगों को मूञ्ज दर्भ कुशादि की मेखला दूर करके ब्रह्मचारी को निरोग बनाकर ब्रह्मचर्य पालन वा वीर्य-रक्षा में सहायता करती है। इसी प्रकार के गुण शण ऊर्णादि में होते हैं।

शण के गुणः यह खट्टा, कषैला, वात कफ के दोषों को दूर करनेवाला, अंग टूटने के रोगों को दूर करता है। आलस्य के दूर करने में शण की मेखला सहायक है।

ऊन की मेखला ऊनी वस्त्र के समान कटिस्थल की गर्मी को बाहर जाने नहीं देगी और बाहर के गर्म वायु के प्रकोप से कटि की रक्षा करेगी। जिस प्रकार मुञ्ज कुश शण की मेखलाओं के लाभ हैं उसी प्रकार ऊन की मेखला के भी लाभ हैं। तीनों वर्णों की पृथक् पृथक् पहिचान के लिए पृथक् पृथक् वस्तुओं के द्वारा मेखला का निर्माण करना लिखा है। लाभ तो सभी मेखलाओं से होता है।

Aditya Shukla

मेखला के अर्थ

प्रथम अर्थ—मेखला का अर्थ कुछ कोशों में किया है। वाचस्पत्य कोश में "मि" धातु से खलच् प्रत्यय गुण और स्त्रीलिंग में टाप् करके मेखला शब्द सिद्ध किया है।

द्वितीय अर्थ—संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ में मी, खल, गुण, टाप्, करके सिद्ध किया है—"मीयते प्रक्षिप्यते कायमध्यभागे"। काय=शरीर के मध्य भाग में (कटि में) जो बांधो जाती है, उसे मेखला कहते हैं। दोनों के अर्थ एक ही हैं।

तृतीय अर्थ—कुछ विद्वानों के मत में यह अशुद्ध है। श्री पूज्य स्वामी वेदानन्द जी (माम्+ईख्+ला) इस तरह सिद्ध करते हैं। इसमें ईख धातु गत्यर्थक है। आदान अर्थवाली ला धातु से घञ् प्रत्यय भाव में है। अर्थ इस प्रकार बनता है—माम् ईख=गति लाति=आददाति=प्रापयति "आतोऽनुपसर्गे कः" से क प्रत्यय हुआ, टाप् स्त्रीलिंग में—

मुझे गति, उत्साह, ज्ञान, जागरूकता, पराक्रम शक्ति अर्थात् ब्रह्मचर्य को प्राप्त कराती है।

चतुर्थार्थः—"मा इह स्खलति अनया इति मेखला"। अनया मेखलया (धारणेन) वीर्यस्खलनं न भवति।

जिसके धारण करने से वीर्यरक्षा होती है, ब्रह्मचर्य का पालन होता है उसे मेखला कहते हैं।

पञ्चमार्थः—मां खं ब्रह्म लाति प्राप्नोति या सा मेखला अर्थात् जो मुझे परमात्मा को, मोक्ष को, वेदज्ञान को अथवा ब्रह्मचर्य को प्राप्त करवाती है वह मेखला है।

षष्ठार्थः—मे=मम खानि=इन्द्रियों को लाति=वश में करती है, मुझे जितेन्द्रिय बनाती है, ब्रह्मचारी बनाती है।

Aditya Shukla

सप्तमार्थः-मा=जीवात्मा, ख=परमात्मा, ला=प्रकृति रूपी साधन, इन तीनों का ज्ञान कराती है उसे मेखला कहते हैं।

जिसे धारण करके बालक ब्रह्मचारी विद्वान् बलवान् निरोग स्वस्थ जितेन्द्रिय बनता है और प्रकृति से लेकर परमात्मा पर्यन्त का ज्ञान करके महान् ब्रह्म (बड़ा) बनता है उच्चपद को प्राप्त होता है। जीवन के चरमलक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति करता है। वह शक्ति मेखला प्रदान करती है।

यथार्थ में मेखला ब्रह्मचारी का ही एकमात्र चिह्न है। यह ब्रह्मचर्य व्रत का प्रतीक है। यज्ञोपवीत शिखा तो ब्रह्मचारी गृहस्थ और वानप्रस्थ तीनों ही धारण करते हैं किन्तु मेखला को केवल धारण करने का अधिकारी ब्रह्मचारी ही है। इसे धारण करके ही ऋषि और देवता बनता है। देवतास्वरूप आचार्य ही इसे ब्रह्मचारी को पहनाने प्रदान करने का अधिकारी है और यह योगी देवताओं की माता, श्रद्धा की दुहिता और ऋषियों की स्वसा है। तपस्वी ब्रह्मचारी का व्रत बन्धन आभूषण है। प्राणापान को वश में कराने वाली है। प्राणों के वश में आने से मनादि सभी इन्द्रियां वश में आ जाती हैं और ब्रह्मचारी पूर्ण जितेन्द्रिय योगी बनकर, वेदादि सभी शास्त्रों की विद्या में पारङ्गत हो जाता है, व्यास की पदवी को धारण करता है।

इस प्रकार महर्षि दयानन्द के शब्दों में मेखला के द्वारा ब्रह्मचर्यव्रत में दीक्षित होकर ऐसे ब्रह्मचारी ही मरण पर्यन्त ब्रह्मचारी रहते हैं। यह बड़ा कठिन काम है कि जो काम पूर्णविद्या वाले जितेन्द्रिय और निर्दोष स्त्री और पुरुष का है। अतः मेखला धारी ब्रह्मचारी निष्काम देव संज्ञक ज्ञानी के चरणों में रहकर ही पूर्ण ब्रह्मचारी, पूर्णयोगी बनता है और निर्दोष जितेन्द्रिय बनकर पूर्णतया स्वस्थ होकर पूर्णायु अर्थात् चारसौ वर्ष की दीर्घायु को

Anujashukla

पूर्वक भोगता है। इस जीवन में भी पूर्ण सुखी जीवन-मुक्त हो
ता है और परम पद मोक्ष को प्राप्त होता है। जैसे महर्षि
द्वाजादि हुए हैं। ब्रह्मचारी भीष्म और गृहस्थ गुरु द्रोणाचार्य थे।
र्षि व्यासादि महाभारत के पतनकाल के समय इसी ब्रह्मचर्यव्रत
कारण दीर्घजीवी हुए हैं। गुरु द्रोण के विषय में लिखा है :—

आकर्णपलितः श्यामो वयसाशीतिपञ्चकः।
संख्ये पर्यचरद् द्रोणो वृद्धः षोडशवर्षवत् ॥

(महाभारत द्रोणपर्व)

गुरु द्रोणाचार्य जो कानों पर्यन्त पलित (सफेद बाल) था
श्याम वर्ण का होगया था। जिसकी आयु ८०×५=४०० वर्ष
पूर्णायु हो गई थी वह वृद्ध युद्ध में १६ वर्ष की आयुवाले कुमार
समान स्फूर्ति से लड़ रहा था। इस प्रकार सब ब्रह्मचर्य के कारण
बलवान् विद्वान् और दीर्घजीवी हुये।

मेखला धारण कराकर अपनी सन्तान को जो ब्रह्मचारी
ाते हैं वे यथार्थ में सच्चे देवता हैं। महर्षि दयानन्द जी
खते हैं :—

जो आचार्य और माता पिता अपने सन्तानों को प्रथम वय
ाल्य काल) में विद्या और गुण ग्रहण के लिए तपस्वी कर
खला धारण करा) और उसी का उपदेश करें और वे सन्तान
प ही आप अखण्डित ब्रह्मचर्य सेवन से तीसरे उत्तम ब्रह्मचर्य का
न करके पूर्ण अर्थात् चारसौ वर्ष पर्यन्त आयु को बढ़ावें वैसे तुम
बढ़ाओ। क्योंकि जो मनुष्य इस ब्रह्मचर्य को प्राप्त होकर लोप
हीं करते वे सब प्रकार के रोगों से रहित होकर, धर्म, अर्थ, काम
र मोक्ष को प्राप्त होते हैं।

इसलिए आचार्य मेखला को धारण कराकर बालक को
पस्वी बनाता है। मेखला ब्रह्मचारी का मुख्य चिह्न है तपस्या का

Aditya Shukla

प्रतीक है। ब्रह्मचर्य का व्रत बन्धन है। सदैव जाकरूक सावधान रहने के लिए मेखला से कटि बांधी जाती है। क्योंकि थोड़ीसी असावधानी से ही ब्रह्मचर्य व्रत टूट जाता है, वीर्य खण्डित हो जाता है। ब्रह्मचारी के लिए आलस्य प्रमाद उपेक्षा असावधानी मृत्यु है। सदैव जागरूक सावधान रहनेवाला ही ब्रह्मचर्य में सफलता प्राप्त करता है।

मेखला वा कौपीन

मेखला वा कौपीन लंगोटी धारण करना एक ही बात है। क्योंकि लंगोटी वा कौपीन मेखला में ही बांधी जाती है। मेखला का मुख्य प्रयोजन कौपीन धारण करना लंगोट वा लंगोटी पहनना ही है। क्योंकि "मरद का लंगोट और घोड़े का तंग २४ घण्टे कसा रहना चाहिए"। यह पूर्ण सत्य है, मरद वा पूर्ण पुरुष वही है जो ब्रह्मचारी हो। अतः ब्रह्मचारी को एक क्षण के लिए भी लंगोट वा कौपीन के बिना नहीं रहना चाहिए। क्योंकि उपस्थेन्द्रिय वा मूत्रेन्द्रिय का संयम ही तो ब्रह्मचर्य है और कौपीन लंगोट उपस्थेन्द्रिय के संयम में परम सहायक है। हरयाणे की लोकोक्ति जो मेखला वा तगड़ी टूट जाने पर बालक चिड़ाने के लिए अपने साथी को कहते हैं। वह इसी सत्य से ओतप्रोत है। "तगड़ तोड़ बाणिये की छोरी" अर्थात् जिसकी तगड़ी, मेखला टूट जाती है वह दुकानदार की छोरी (लड़की) के समान निर्बल होता है। दुकानदार परिश्रम का कार्य न करने से निर्बल होता है और उस की लड़की और भी अधिक निर्बल होती है। जो मेखला तगड़ी ब्रह्मचर्य व्रत को खण्डित कर देता है, तोड़ देता है वह बणिए की छोरी (लड़की) के समान निर्बल भीरू होता है। मेखला का नाम तागड़ी वा तगड़ी इसलिए है कि इसे धारण करने से ब्रह्मचारी रहनेसे तगड़ा सुदृढ़ बलवान् रहता है। 'कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः'

कौपीनधारी ब्रह्मचारी ही निश्चय से भाग्यवान् होता है।

लंगोटी का सच्चा सच्चा और लंगोटी का कच्चा कच्चा कहलाता है। धनैश्वर्य विद्या बल सब की प्राप्ति ब्रह्मचर्य से ही होती है। मेखला कौपीन ब्रह्मचर्य पालन में मुख्य साधन के रूप में प्रयुक्त होती है। लंगोट (कौपीन) व्यर्थ की उत्तेजना से ब्रह्मचारी को बचाता है। मूत्रेन्द्रिय के संयम में अत्यन्त सहायक है।

वीर्यरक्षार्थ सदा कौपीन बांधना, लंगोट को सदैव कसे रहना अत्यन्त श्रेयस्कर और हितकारी है। क्योंकि मूत्रेन्द्रिय की उत्तेजना से वीर्यनाश होता है और कौपीन वा मेखला इसके दूर करने में सहायक हैं। जागरण तथा शयन के समय दोनों कालों में लंगोट उत्तेजना से बचाता है। मूत्रेन्द्रिय की उत्तेजना से शरीर तथा मन दोनों ही अशान्त हो जाते हैं। यह उत्तेजना सर्वनाश का कारण बनती है। जहां लंगोट से यह दूर होती है वहां मन भी शान्त रहता है और ब्रह्मचर्य की साधना में सिद्धि वा सफलता प्राप्त होती है।

मेखला और अन्त्रवृद्धि

लंगोट वा कौपीन बांधने से अण्डकोष नहीं बढ़ते। इस भयंकर रोग से तथा इसके कष्टों से व्यक्ति सर्वथा बचा रहता है। मेखला धारण करने तथा लंगोट बांधने से अन्त्रवृद्धि-आंत उतरना (हिरणिया) आदि भयंकर कष्टदायक रोग नहीं होते।

आजकल के पढ़े लिखे शिक्षित लोग मेखला नहीं धारण करते और न ही कौपीन लंगोट बांधते। इसीलिए ७५% शिक्षितों के अण्डकोष वृद्धि आंत-उतरना (हिरणिया) आदि रोग होते हैं। फिर इनकी शल्यक्रिया (आपरेशन) कराते हैं। एवं इनमें से अधिकतर आपरेशन सफल न होने से अल्पायु में ही मर जाते हैं। अतः

ब्रह्मचारी की तो मेखला और कौपीन भूषण हैं ही किन्तु गृहस्थो को भी लंगोट पहनना सर्वथा हितकर है। लंगोट से अन्त्र-वृद्धि, अण्डकोष वृद्धि, व्यर्थ की कामोत्तेजना से बचना है वहां वीर्य रक्षा वा पुरुषत्व की भी रक्षा होती है। लंगोट से पुरुषत्व घटता नहीं बढ़ता है। पुरुष इससे अधिक पवित्र शुद्ध और अत्यन्त संयम का जीवन बिताता है, ये सभी अनुभवी लोगों के अनुभव हैं। बहुत से गृहस्थ मेरे ऐसे मित्र हैं जिन्हें सारी आयु लंगोट बांधने का पक्का स्वभाव रहा है। जो चौबीस घण्टे लंगोट रखते हैं, पूर्ण स्वस्थ और अनेक पुत्रों के पिता है।

लंगोट वा कौपीन कैसी हो ?

लंगोट वा कौपीन बारीक वस्त्र की होनी चाहिये यह दोहरा कपड़े को न हो, किन्तु ऐकहरा वस्त्र की ही होनी चाहिए। कुश्ती करने का दोहरा लंगोट वा जांघिया ब्रह्मचारी वा अन्य किसी गृहस्थी को भी हर समय नहीं पहनना चाहिए। क्योंकि उससे अधिक उष्णता (गर्मी) बढ़ने के कारण वीर्यनाश की संभावना रहती है। मैली वा गन्दी कौपीन वा लंगोट भी हानिकारक है। अतः प्रत्येक ब्रह्मचारी के पास न्यून से न्यून दो कौपीन होनी चाहियें जो बारीक वस्त्र की शुद्ध तथा पवित्र धुली हुई हों।

मेखला धारण कराकर आचार्य युवा ब्रह्मचारी को वेदारम्भ संस्कार में वस्त्र भी धारण कराते हैं और यह मन्त्र भी बोलते हैं:-

युवा सुवासा परिवीत आगात् स उ श्रेयान् भवति जायमानः।
तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः॥

पारस्कर गृह्यसूत्र २।२।९

अर्थात् दृढ शरीरवाला, स्वच्छ वस्त्र धारण करनेवाला यज्ञोपवीत मेखला आदि से परिवेष्टित ब्रह्मचारी सम्मुख प्राप्त

Adityashukla

ता है वैसी ही स्थिति करता हुआ वह लोगों का कल्याण करने ला होता है। बुद्धिपूर्वक कार्यकर्ता पूर्वापरदर्शी अच्छे ध्यानवाले न से देवभाव की कामना करनेवाले विद्वान् उस ब्रह्मचारी को द्गुणयुक्त शिक्षा-प्रदान से उन्नत करते हैं।

इस विषय में महर्षि दयानन्द जी महाराज लिखते हैं:-"इस न्त्र को बोल के दो शुद्ध कौपीन, दो अंगोच्छे और एक उत्तरीय वद्दर) और दो कटिवस्त्र आचार्य ब्रह्मचारी को देवे। उन में से क कौपीन, एक कटि-वस्त्र और एक उपन्ना बालक को आचार्य ारण करावे।"

आचार्य स्वयं कौपीन धारण करता है तथा दो कौपीन ब्रह्म-ारी को देता है। इससे यही सिद्ध होता है कि ब्रह्मचारी को ौपीन सदैव धारण करने योग्य वस्त्र है।

तगड़ी को धारण करनेवाला सदैव तगड़ा सुदृढ़ रहता है। ह्मचारी को सदैव मेखला तथा कौपीनधारी होना चाहिए। बिना खला वा कौपीन के उसे एक क्षण भी नहीं रहना चाहिए।

मेखला टूटने पर क्या करें ?

मनु जी लिखते हैं:—

मेखलामजिनं दण्डमुपवीतं कमण्डलुम्।
अप्सु प्रास्य विनष्टानि गृह्णीतान्यानि मन्त्रवत्॥

(मनुस्मृति १.१६४)

मेखला आदि के विनष्ट होने पर इन्हें जल में फेंक देवें और मन्त्र बोलकर नवीन धारण कर लेवें।

जहां ब्रह्मचर्य पालन में मेखला और कौपीन सहायक है वहां

इनके धारण करने से स्फूर्ति रहती है, आलस्य दूर भागता है, व्यक्ति जागरूक रहता है, कार्य करने के लिये सदैव कमर कसी रहती है, लंगोट के बांधने से चलने फिरने दौड़ने परिश्रम व व्यायाम करने में सुविधा तथा गुप्त व मर्म स्थान की विशेष सुरक्षा रहती है। दो कौपीन आचार्य इसलिए देता है कि ब्रह्मचारी प्रति-दिन स्नान करते समय एक कौपीन को धोकर सुखा देवे तथा दूसरी शुद्ध कौपीन को तुरन्त धारण कर लेवे।

मेखला की गांठें

त्रिवृता ग्रन्थिनैकेन त्रिभिः पञ्चभिरेव वा।

(मनुस्मृति २।४३)

मेखला तीन लड़वाली होती है और इसमें एक तीन वा पांच गांठें होती हैं। यहां गांठों का विकल्प है चाहे एक गांठ हो या तीन अथवा पांच गांठें हों। यहां कोई स्पष्ट विधान नहीं कि किसको कितनी गांठें लगानी चाहियें। कुछ टीकाकारों का मत है कि एक ब्राह्मण को, तीन क्षत्रिय को और पांच गांठे वैश्य को मेखला में लगानी चाहिएं। अथवा एक तीन वा पांच यथेच्छ लगावें।

गांठों के लाभ

कुछ अनुभवी ब्रह्मचारियों का यह मत है कि गांठें पीठ के पीछे लगानी चाहिएं जिससे ब्रह्मचारी सीधा सोने को भूल न करे। क्योंकि सीधा सोने से स्वप्न आते हैं और हाथ छाती पर पड़ने से दबकर सोनेवाला अधिक स्वप्न देखता है तथा बड़बड़ाने भी लगता है। ब्रह्मचारी की निद्रा बिना स्वप्न की गहरी तथा गाढ होनी चाहिए। उस समय स्वप्न कदापि नहीं आने चाहिएं। मेखलाधारी ब्रह्मचारी की कमर में मेखला की लगी हुई गांठें उसे कदाचित्

...ा न सोने देंगी, वे चुभेंगी और नींद टूट जायेगी। इस प्रकार ...चारी स्वप्नों से बच जायेगा। निद्रा में स्वप्न आने से यदि ...त गन्दे हों तो स्वप्नदोष से ब्रह्मचर्य नष्ट हो जाता है। जहां ...गृत अवस्था में मेखला प्राणापान की गति को ठीक करके वीर्य-...ति को ऊर्ध्व करके ब्रह्मचारी को उर्ध्वरेता बनाती है वहां निद्रा में ...प्नों से बचाकर स्वप्नदोष रोग के द्वारा वीर्यनाश से बचाती है। ...ठि चुभने से ब्रह्मचारी सीधा सोना छोड़ देता है और दांयीं करवट ...र होकर स्वप्नों तथा वीर्यनाश से बच जाता है। "ब्रह्मचारी की ...द्रा" नामक मेरी पुस्तक में इस पर विस्तार से लिखा है, वहां ...ख लेवें।

इस प्रकार मेखला दोनों अवस्थाओं में स्वसा=बहन और दुहिता=पुत्री के समान ब्रह्मचारी को वीर्यनाश से बचाकर पवित्र करती है तथा उसका हित सोचती है। यह ब्रह्मचारी को वीर्यवान् बनाकर वीर और बलवान् भी बनाती है। "जो जागत है सो पावत है जो सोवत है सो खोवत है।" हरयाणे की लोकोक्ति "जागते की कटिया, सोवते का काटड़ा" के अनुसार जागनेवाला लाभ उठाता है और सोनेवाला हानि।

वेद भगवान् ने इस सत्य को इस प्रकार कहा है:—

यो जागार तमृचः कामयन्ते यो जागार तमु सामानि यन्ति।
यो जागार तमयं सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योका॥
(ऋग्वेद ५। ४४। २४)

जो जागता है उसी को ऋक् ज्ञान चाहता है, उसे यजु कर्म-काण्ड और साम उपासना में सफलता की सिद्धि मिलती है। जो जागता है उसे स्वयं सुख की वर्षा करनेवाला सोम रूप प्रभु स्वयं कहता है कि मैं तुम्हारा सखा हूँ, मित्र हूँ, मैं तेरे साथ रहूँगा। मैं

ओर तू एक साथ एक ही घर में रहेंगे। निष्कर्ष यह है कि सब कुछ जागनेवाले का है। यह लोक और परलोक सब जागनेवाले का ही है। मेखला आचार्यदेव ने ब्रह्मचारी को जागरूक रहने के लिए ही तो बांधी है। जागृतावस्था में ही नहीं निद्रा में भी सावधान रहने के लिए मेखला के पवित्र व्रतबन्धन में ब्रह्मचारी की कमर बांधी है, सजाई है। इसकी तीनों लड़ें यही शब्द सुना रही हैं। जागते रहो। स्वप्न में भी जागते रहो। गाढ़ निद्रा में भी जागते के समान रहो, कदापि असावधान न रहो। असावधानी ब्रह्मचारी की मृत्यु है और जागरूकता ब्रह्मचारी के लिए जीवन है। यही मेखला का सार है। नीतिकारों ने भी इस भाव को यों प्रकट किया है:—

काकचेष्टा वक-ध्यानं श्वाननिद्रा तथैव च।
अल्पाहारी गृहत्यागी विद्यार्थी पञ्चलक्षणम्॥

अर्थात् काक के समान चेष्टा करनेवाला सदैव जागरूक एवं सावधान रहनेवाला, बगुले के समान अपने लक्ष्य को ध्यान में रखने वाला और कुत्ते के समान निद्रावाला अर्थात् सोते समय भी इतना सावधान हो कि जब चाहे उठ जावे, सदैव अल्प भोजन करनेवाला अर्थात् मिताहारी भूख रखकर खानेवाला हो। विद्यार्थी जीवन में कभी भी घर में मोह न रखे, विद्यासमाप्ति पर्यन्त आचार्य की चरणछाया में रहनेवाला, जब तक विद्या पूर्ण न हो तब तक गुरुकुल में ही वास करे। निष्कर्ष यह है कि–उठते-बैठते, खाते-पीते, सोते और जागते सदैव सभी अवस्थाओं में जागरूक और सावधान रहनेवाला ब्रह्मचारी ही ब्रह्मचर्य पालन में सफल होता है। मेखला निरन्तर श्रद्धा-पूर्वक और दीर्घकाल अर्थात् जीवन के अन्तिम क्षण पर्यन्त सावधान रहने के लिए ही कटि पर आचार्य द्वारा बांधी

Aditya Shukla

ती है। मरने पर शव पर से मेखला को खोल लेते हैं ऐसा देखने
आता है। जीवनकाल में बिना मेखला के देखने पर बालक हरयाणे
तो अनेक प्रकार के कटुवचन बोलकर अथवा गाली देकर परस्पर
ड़ाते हैं। जैसेः—

"तनिया न तागड़ी हमारा साला वागड़ो"

जिसके तनिया लङ्गोट और तागड़ी मेखला नहीं होती है वह
ागड़ी (मरुभूमि के निवासी) के समान भूखा ऐश्वर्यहीन और दुःखी
हता है। अतः बिना मेखला (तागड़ी) के तथा लंगोट के बिना
तनिया रहित) कभी नहीं रहना चाहिए। क्योंकि तनिया तनु शरीर
ो तन्दरुस्त (स्वस्थ) और तागड़ी शरीर को तगड़ा बलवान् सुदृढ़
वस्थ रखती है।

वीरों की मेखला

आहुतस्याभिहुत ऋषीणामस्यायुधम् ।
पूर्वा व्रतस्य प्राश्नती वीरघ्नी भव मेखले ॥

(अ० ३।१३३।२)

(मेखले) हे मेखला ! तू (आहुता) यथाविधि दान की गई (असि) है। (ऋषीणाम्) धर्ममार्ग बतानेवाले ऋषियों का (आयुधम्) शस्त्ररूप (असि) है। (व्रतस्य) उत्तम व्रत या नियम के (पूर्वा) पहले (प्राश्नती) व्याप्त होनेवाली और (वीरघ्नी) वीरों को प्राप्त होने वाली तू (भव) हो।

मेखला को अपनी इच्छा से कोई स्वयं धारण नहीं करता था। इसे निष्काम सेवक, चारों वेदों के ज्ञाता, देवसंज्ञक विद्वान् आचार्य वेदारम्भ संस्कार में अपने शिष्य ब्रह्मचारी को यथाविधि ब्रह्मचर्यव्रत की दीक्षा देते हुए प्रदान करता था। विधिपूर्वक आचार्य

मृत्यु का ब्रह्मचारी

मृत्योरहं ब्रह्मचारी यदस्मि निर्याचन् भूतात् पुरुषं यमाय ।
तमहं ब्रह्मणा तपसा श्रमेणानयैनं मेखलया सिनामि ॥
(अथर्व०६-१३३-३)

(भूतात्) प्राप्त (मृत्योः) मृत्यु से (पुरुषं) इस पुरुष आत्मा को (निर्याचन्) बाहर निकालता हुआ (अहं) मैं (यमाय) नियम पालने के लिये (यत्) जो (ब्रह्मचारी) ब्रह्मचारी (अस्मि) हूं (तं) वैसे (एनं) इस आत्मा को (ब्रह्मणा) वेद ज्ञान (तपसा) तप योगाभ्यास और (श्रमेण) परिश्रम के साथ (अनया मेखलया) इस मेखला से (अहं) मैं (सिनामि) बांधता हूं

दूसरा अर्थ इस प्रकार है—

(यत्) क्योंकि (अहम्) मैं (मृत्योः) आदित्य के समान तेजस्वी विद्वान् का अर्थात् अज्ञान के बन्धन से मुक्त करनेवाले आचार्य का ब्रह्मचारी हूं । इसलिए (भूतात्) इस पञ्चभूत के बने देह से (यमाय) उस ब्रह्म सर्वनियन्ता परमेश्वर की प्राप्ति के लिए (पुरुषम्) देहपुरी के निवासी आत्मा को (निर्याचन् अस्मि) मुक्त करने के यत्न में हूं । हे आचार्य ! ऐसे (तम्) उसे (एनम्) इस आत्मा को (अहम्) मैं आपका शिष्य ब्रह्मचारी (ब्रह्मणा) ब्रह्म वेदोपदेश से (तपसा) तप योगाभ्यास से (श्रमेण) व्यायामादि के श्रम से (अनया मेखलया) इस मेखला से (सिनामि) बांधता हूं ।

दोनों प्रकार के अर्थों में भावना एक ही है । यहां आचार्य का मृत्यु नाम से स्मरण किया है और ब्रह्मचारी कहता है मैं मृत्यु आचार्य का ब्रह्मचारी हूँ । उस आचार्य की शिक्षा से संयम का जीवन बिताकर अपनी आत्मा को उन्नत करके परमेश्वर को प्राप्त करूंगा अर्थात् मोक्ष को प्राप्त करूंगा । इस के लिए ही

आचार्य से मेखला धारण की है, लंगोट कसा है, मैं कौपीन-
ी बना हूँ। ब्रह्मचर्यव्रत की पूर्ति के लिए मेखला धारण कर
दीक्षा ली है वहां वेदविद्या, ज्ञान अर्जन, योगाभ्यास, तपश्चर्या,
याम, प्राणायाम, आदि ब्रह्मचर्य के मुख्य साधनों की साधना में
ार्यचरणों में रहकर जुटा हूँ। मेरे तो आचार्य साक्षात् स्वयं
ु नाम के आचार्य हैं उन्होंने मुझे मृत्यु का रहस्य भलिभांति
झा दिया है। मुझे अब मृत्यु का भय है ही नहीं। क्योंकि जिस
ु से सब डरते हैं मैं तो उस मृत्यु को दूर भगाने के लिए, उसे
ने के लिए देव बन रहा हूँ। मेरे गुरुदेव साक्षात् देवता हैं।
होंने मुझे मेखला बांधकर संयम के जीवन से जितेन्द्रिय ब्रह्मचारी
कर मृत्यु को ठोकर मारने के लिए ब्रह्मचर्यरूपी तप की भट्ठी में
कर मृत्युञ्जय बना दिया है, मैं वेद भगवान् की इस आज्ञा को
ह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत" पालन करने में मृत्यु
ार्य की कृपा से समर्थ हो गया हूँ।

मृत्यु नाम आचार्य का यहां इसलिये लिया है कि वह मृत्यु
यथार्थ ज्ञान कराकर मृत्यु के भय को भगानेवाला है। मृत्यु का
तब तक ही लगता है, जब तक मनुष्य इनके सच्चे स्वरूप
समझ नहीं लेता है। गीता में इसका अच्छा चित्रण किया है—

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय,
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-
न्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥१३।२२॥

जैसे मनुष्य पुराने कपड़ों को छोड़कर और नये पहन लेता है,
से ही शरीरधारी पुराने शरीरों को छोड़कर और नये शरीरों
ो धारण कर लेता है। पुरानी वस्तु के स्थान पर नयी वस्तु

मिलने पर हर्ष ही होता है पुनः दुःख और भय किसलिए ? यह भाव जब मनुष्य समझ लेता है तो दुःख और भय का कारण ही नहीं रहता। इस जीवन की चिन्ता छुड़ाकर नये जीवन में नई भोग-सामग्री प्राप्त कराना मृत्यु का कार्य है, यह सुख की धारणा है। इसी शिक्षा से शिक्षित व्यक्ति मस्त हो कहता है :—

जिस मरने से जग डरे मो को सो आनन्द।
कब मरिये कब पाईये पूरन परमानन्द॥

मृत्यु तो नये जीवन का नाम ही है और मोक्ष के परमानन्द की प्राप्ति भी इससे ही होती है। अतः मृत्यु नाम आचार्य का सुख प्रद है, भयावह नहीं है।

उपनिषद् में नचिकेता (सन्देहशून्य) ब्रह्मचारी भी यम (मृत्यु नाम के आचार्य के पास ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति के लिये गया था।

इस वेद मन्त्र में भी मृत्यु नाम का आचार्य अपने ब्रह्मचारी को सब प्रकार के कष्टों, दुःखों और बन्धनों से छुड़ानेवाला है तथा मोक्ष तक पहुंचानेवाला है। मेखला, वेदज्ञान, तप, योग और परिश्रम व्यायामादि ब्रह्मचर्य के मुख्य साधनों वा नियमों में बांध कर उनकी शिक्षा देकर ब्रह्मचारी को मृत्युञ्जय बनाना ही आचार्य का मुख्योद्देश्य है।

एक अन्य मन्त्र में ब्रह्मचर्यसूक्त में भी आचार्य के अनेक नामों में मृत्यु भी उसका नाम आया है—

आचार्यो मृत्युर्वरुणः सोम ओषधयः पयः।

मृत्यु वरुण और सोम ये सभी आचार्य के गुणों के अनुसार नाम हैं।

अथर्ववेद के ब्रह्मचर्यसूक्त में एक मन्त्र मेखला सम्बन्धी इस प्रकार का आया है।

समित् पृथिवी द्यौर्द्वितीयोतान्तरिक्षं समिधा पृणाति ।
चारी समिधा मेखलया श्रमेण लोकांस्तपसा पिपर्त्ति ॥
(अथर्व० ब्रह्मचर्यसूक्त)

यह पृथिवी ब्रह्मचारी की प्रथम समिधा है। यह द्यौ दूसरी मिधा है और तीसरी समित् अन्तरिक्ष है। इन तीनों समिधाओं रा अर्थात् इन तीन समिधाओं का अपनी आत्माग्नि में आधान कर चारी सबका पालन करता और पूर्ण करता है। ब्रह्मज्ञान में क्षित ब्रह्मचारी समित् आधान द्वारा और मेखला द्वारा, श्रम र तप द्वारा समस्त मनुष्यों का पालन करता है और इन्हीं धनों के द्वारा ब्रह्मचर्य का पालन करता है। इस मन्त्र में समिधा द है, मेखलासूक्त के मन्त्र में ब्रह्मणा शब्द है, अर्थ दोनों का क ही है। ज्ञान का प्रकाश, वेद ज्ञान की दीप्ति वा पवित्र ज्योति रा वह अपने आपको तथा सारे संसार को प्रकाशित करता है। थिवी अन्तरिक्ष और द्यौ इन तीनों लोकों का ज्ञान करके संसार ज्ञान का प्रकाश फैलाता है। जहां वह इन तीन बाह्य लोकों का ध्ययन करता है, जानने का यत्न करता है वहां अपने तीनों लोकों रीर, अन्तःकरण (मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार) और आत्मा ा भी साक्षात्कार करता है। वह वेद ज्ञान के द्वारा अपने अन्दर था बाहर के अविद्या अन्धकार को दूर भगाता है। भूत, भविष्य ौर वर्तमान के रहस्यों को भी समझने का यत्न करता है। मैं कौन हूँ, कहां से आया हूँ, मुझे यहां क्या करना है, आगे कहां जाना है, इस सारे कालचक्र को जानने का यत्न वह अपने मृत्यु नाम के आचार्य के चरणों में बैठकर करता है। कीड़ी से कुञ्जर तक, मूर्ख से विद्वान् तक, जिस मृत्यु के नाम से सभी कांपते हैं वह उसी रहस्य को समझता है, उसी मौत के साथ टकराता है, खेल करता है, उसे गींडो (फुटबाल) समझकर ठोकर मारता है। अपने

यह कवित्त हरयाणे के वीर रस के प्रसिद्ध कवि चौधरी ईश्वरसिंह का है जिसे पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी मस्ती से गाते हैं। कौपीनधारी मेखला के एकमात्र प्रचारक लंगोटी के पक्के ब्रह्मचारी महर्षि दयानन्द के विषय में है।

शूरवीर ब्रह्मचारी

विद्या में हो नहीं बल्कि स्वामी जैसे शूरवीर।
न मान्धाता चक्रवर्ती बलधारी थे॥
राम नहीं रावण नहीं न वीर बाणासुर।
न अङ्गद न हनुमान न बाली ब्रह्मचारी थे॥
भीष्म नहीं, भीम नहीं, न युधिष्ठिर सत्यवादी।
न अर्जुन से बलवान् जिनके बाण लक्ष्यधारी थे।
कहे ईश्वरसिंह एक ओर दुनिया सारी।
एक ओर ऋषि दयानन्द ब्रह्मचारी थे॥

चन्द्र कवि ने ठीक कहा है :—

डेढ़ अरब के मुकाबले पर इकला ही वीर दहाड़ा था।
जो कोई उनके सम्मुख आया पल में उसे पछाड़ा था,
जिसका शोर मचा दुनियां में ऋषि दयानन्द आला ॥३॥

महर्षि दयानन्द के आने से पूर्व तो सारे संसार में घोर अन्धकार छाया हुआ था। ब्रह्मचर्य का नाम भी संसार के लोग नहीं जानते थे। बाल विवाह, वृद्ध विवाह आदि अनर्थों की भरमार थी। भारत में योरुप की दूषित अनार्ष शिक्षा प्रणाली के कारण, चोरी जारी, मांस मदिरा, हत्या कत्ल सभी पापों की खूब भरमार थी। इन सब रोगों की एकमात्र चिकित्सा अमोघौषध महर्षि दयानन्द ने आर्षशिक्षा वेदशिक्षाप्रणाली बतायी। इस का पुनः प्रचार महर्षि वेदव्यास के पीछे ५ सहस्र वर्ष पश्चात् आचार्यप्रवर देव

Adityashukla

...न्द ने किया। शिखा सूत्र मेखला की पुनः याद दिलायी। ...वैदिक संस्कृति के प्रतीक मेखलादि का महत्त्व पुनः ऋषियों ...वृत्तान्त को समझाया। यथार्थ में कोई माने चाहे न माने, वर्त-...न युग में महर्षि दयानन्द ही एकमात्र वेदप्राण पुरुष और ...र्ष ज्ञान के अद्वितीय प्रचारक हुये हैं। आर्ष ज्ञान के विस्तार और ...चार से मानव समाज में सुख और शान्ति के सूर्य का उदय होगा। ...र्ष शिक्षा के केन्द्र हैं केवल गुरुकुल। इसलिये संसार कल्या-...र्थ और सुख शान्ति की प्राप्ति के लिये अपने बालक बालिकाओं ... केवल गुरुकुल में ही शिक्षा दिलावें। स्कूल कालिज रावण की ...का हैं इन से सर्वथा दूर रहें।

महर्षि दयानन्द और वेद

हरयाणा के प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक महात्मा दादा ...स्तीराम जी ने भजन में इस का अच्छा चित्र खेंचा है—

टेक—स्वामी हमारे को वेद प्यारे थे।
वेद के कारण घर छोड़ा सब संसार का सुख छोड़ दिया।
वेद के कारण राख रमाई वेद के कारण योग लिया॥
वेद के कारण बन-बन डोले वेद के कारण दुःख सहन किया।
वेद के कारण यौवन जग ढूंढा जैसे राम ने ढूंडी सिया॥
वेद के कारण फिरे पहाड़ों शीत उष्ण जल सिर पे लिया।
वेद के कारण खाई बरफ कोई सुने तो थर थर कांपे हिया॥
वेद के कारण धूणी तपे तन सुन्दर अग्नि में होम दिया।
वेद के कारण दुष्ट जनों के हाथ से जाकर जहर पिया जी॥
स्वामी को विष प्यावनहारे ब्रह्महत्यारे थे। स्वामी हमारे॥
वैदिक बूटा अधिक अनूठा सब मिल उसको सींचो सही।
इसका थामनेवाला है गुरुकुल जब यह बिगड़ा तब नईया बही॥

विद्या बिन मत जीयो पुत्र यों हाथ हृदय पर लाके कही।
गऊ रक्षा करो तन मन धन से इन बिना कहां दूध दही॥
अनाथ रक्षा करने की तुम्हें दयानन्द ने शिक्षा दई।
चलती बेर क्या कह गये तुम को वचन याद वह हैं या नहीं॥
उठो खोलदो किवाड़ कहकर पारब्रह्म की शरण लई।
रस्सी जहाज की दे तुमको फिर ऋषि दुनियां छोड़ दई जी॥
'हरीसिंह' हम उस योगी के ऋण चढ़ सारे थे॥ स्वामी हमारे॥

महर्षि दयानन्द का हम सब पर इतना ऋण है कि जिसे लेखनी लिख नहीं सकती और वाणी बखान नहीं सकती। जितने रोम मेरे शरीर पर हैं यदि मैं इतने जन्म लेकर सारी आयु ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए वेदधर्म और आर्ष शिक्षा का प्रचार करूं तब : उस देवर्षि दयानन्द के उपकार वा ऋण से अनृण नहीं हो सकता। ऋषिवर आपने जीवन में १६ वार विष पीकर भी हमें ब्रह्मचर्यामृत का पान कराया। शिखा सूत्र और मेखला पहनाकर पुनः ब्रह्मचर्य की लुप्त हुई प्रणाली का उद्धार किया। एक सच्चे आचार्य का कर्त्तव्य निभाया। आर्य जाति को मृत्यु शय्या से उठा कर पुनः जीवनामृत का पान कराया। मुन्शीराम से पतित को महात्मा और नास्तिक गुरुदत्त को मुनिवरों की पदवी तक पहुँचाया। स्वयं ब्रह्मचर्य के तप से परमपद को प्राप्त कर मृत्युञ्जय कहलाये।

देश के बालको और युवको ऋषिवर के पदचिह्नों पर चलो। वीर्यरक्षार्थ मेखला धारण कर सच्चे ब्रह्मचारी बनो, सच्चे मानव बनकर देवता बनने का यत्न करो, इसी में सबका हित और कल्याण है।

भारत के प्राचीन मुद्रांक

लेखक—स्वामी ओमानन्द सरस्वती। मू० ५०१ रु०

पुरातत्त्वीय शोध के आधार पर लिखे गये इस मौलिक ग्रन्थ में भारत के प्राचीन प्रसिद्ध नगर कौशाम्बी, अहिच्छत्रा, स्रुघ्न, सुनेत, प्रकृतानाकनगर, रोहीतक आदि से उपलब्ध प्राचीन सैकड़ों मुद्रांक (मोहरों) का सचित्र विवरण प्रकाशित किया है। हिन्दी भाषा में इस विषय का प्रथम और स्तुत्य प्रयास किया गया है। श्री स्वामी जी ने पन्द्रह वर्ष और लाखों रुपये लगाकर यौधेय, वृष्णि, पाञ्चाल आदि गणराज्यों के सेनापति, महासेनापति आदि राज्याधिकारियों के मुद्रांक एकत्र किये हैं। प्राचीन भारत के लुप्त इतिहास के पुनर्लेखन में यह सामग्री अपना बेजोड़ स्थान रखती है। पुस्तक संग्रहणीय और पठनीय है।

भारत के प्राचीन टकसाल

लेखक—स्वामी ओमानन्द सरस्वती। मूल्य २०० रुपये

पुरातत्त्व की विशुद्ध सामग्री के आधार पर प्रस्तुत किये गये इस ऐतिहासिक शोध ग्रन्थ में प्राचीन भारत की मुद्रा निर्माण पद्धति पर महत्वपूर्ण प्रकाश डाला गया है। इस ग्रन्थ में कार्षापण यौधेय, भारतीय यवन राजा, कुषाण, सामन्तदेव, आदिवाराह मिहिरभोज, गदिया और भारतसासानी आदि विविध प्रकार की स्वर्ण, रजत और ताम्र मूद्राओं के सांचों का सचित्र और विशद वर्णन किया गया है। यह १८ वर्षों के परिश्रम का अद्भुत और मौलिक प्रयास है। ग्रन्थ वस्तुतः पठनीय और संग्रहणीय है।

निर्देशक :

हरयाणा प्रान्तीय पुरातव संग्रहालय

(गुरुकुल झज्जर, रोहतक हरियाणा) दूरभाष ४४

Aditya Shukla

ये अंतिम पार्ट था सभी पार्ट आपने पढ़ ही लिए होंगे

